भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या : 3945
उत्तर देने की तारीख : सोमवार, 18 अगस्त, 2025
27 श्रावण, 1947 (शक)

दक्षिण भारत में प्राचीन तमिल शिलालेख

3945. **श्री डी. एम. कथीर आनंद:**

डॉ. टी. सुमति उर्फ तामिझाची थंगापंडियन:

क्या **संस्कृति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) और तमिलनाडु राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा तमिलनाडु में पाए गए प्राचीन राजवंशीय शासकों के कुछ ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण ताम्रपत्र पर लेख विदेशी संग्रहालयों में रखे गए हैं और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और दक्षिण भारत में राजवंशवार पाए गए ताम्रपत्र लेखों की कुल संख्या कितनी है और वे संग्रहालय कहाँ स्थित है जहां उन्हें संरक्षित रूप से रखा गया है;

(ख) क्या यह सच है कि दक्षिण भारत में पाए गए कुल 1.5 लाख प्राचीन शिलालेखों में से 1 लाख से अधिक शिलालेख तमिल भाषा में हैं, जो 200 ईसा पूर्व से 1800 ईस्वी तक के हैं और यदि हाँ, तो वेल्लोर लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र में पाए गए ऐतिहासिक शिलालेखों सहित तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) क्या एएसआई की पुरालेख शाखा ने स्वतंत्रता से पहले और बाद में एपिग्राफिका इंडिका के कई खंड और दक्षिण भारतीय शिलालेखों की श्रृंखला प्रकाशित की है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और एएसआई एपिग्राफिका इंडिका और दक्षिण भारतीय शिलालेखों के अंतिम खंड के प्रकाशित होने की तिथि क्या है?

उत्तर
संस्कृति और पर्यटन मंत्री
(श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा तमिलनाडु में प्राप्त कोई भी ताम्रपत्र शिलालेख विदेश के संग्रहालयों में नहीं रखा गया है।

(ख): भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा प्रतिलिपि किए गए शिलालेखों की कुल संख्या लगभग 73,732 हैं, जिनमें से 26,416 शिलालेख तमिल लिपि में हैं। वेल्लोर लोकसभा क्षेत्र में पाए गए ऐतिहासिक शिलालेखों सहित इन समस्त शिलालेखों का अर्थ निकाला गया है और इन्हें भारतीय पुरालेख की वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित किया गया है।

(ग): भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने एपिग्राफिया इंडिका और दक्षिण भारतीय शिलालेखों के कई अंक प्रकाशित किए हैं। एपिग्राफिया इंडिका का नवीनतम अंक वर्ष 2012 में और दक्षिण भारतीय शिलालेख वर्ष 2025 में प्रकाशित हुआ था। दक्षिण भारतीय शिलालेखों के 45 अंकों में से 18 अंक स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले और शेष 27 अंक स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रकाशित हुए हैं।

*****